वर्ष 40-41 ■ अंक 16 - 22, 1 - 3
जून 2023 - मार्च 2024 (संयुक्तांक)
मूल्य ₹200

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

प्रसंगवश
तस्लीमा नसरीन, रूपरेखा वर्मा, गौहर रज़ा, विभूति नारायण राय, रामशरण जोशी

संस्कृति और सिनेमा
श्याम बेनेगल, अनुराग कश्यप, सुधीर मिश्रा, कुलदीप सिंह, अचला नागर, राकेश बेदी

कथाकार
कृश्न चंदर - बलवंत सिंह, काशीनाथ सिंह, जाबिर हुसैन, शरण कुमार लिम्बाले, सुधा अरोड़ा, नासिरा शर्मा, उषाकिरण खान, प्रियंवद, भगवान दास मोरवाल, अजय नावरिया, गीताश्री, सुशीला टाकभौरे, महादेव टोप्पो, रत्न कुमार सौंभरिया

कवि
अल्लम प्रभु - महादेवी अक्क, त्रिलोचन, नरेश सक्सेना, राजेश जोशी, अनामिका, दिनेश कुमार शुक्ल, कृष्ण कल्पित, सविता सिंह, एकांत श्रीवास्तव, नीलेश रघुवंशी, अनिता भारती

आलोचक
नामवर सिंह, शिव कुमार मिश्र, नीलकांत, प्रदीप सक्सेना, चौथीराम यादव, नंद किशोर आचार्य, राजेन्द्र कुमार, वीरेन्द्र यादव, रोहिणी अग्रवाल, गरिमा श्रीवास्तव, कमलेश वर्मा

साथ ही कहानी, कविता, लेख और समीक्षाएँ भी.....

संस्थापक संपादक : विभूति नारायण राय
सलाहकार संपादक : भारत भारद्वाज

☐ वर्ष41 ☐ अंक1 ☐ जून–2023–मार्च 2024 (संयुक्तांक)
☐ मूल्य 200/-

RNI पंजीकरण संख्या 40342/ 83 UPHIN12563

संपादकीय कार्यालय
राजीव निकेतन 16/57 डी-10, कादीपुर, शिवपुर, वाराणसी (उ.प्र.) पिन-221003
मो. 9005484595, 9531834834
9415893480

ई-मेल :
पत्रिका के लिए- vartmansahitya2021@gmail.com
कार्यालय के लिए-vartmansahitya2024@gmail.com
वेबसाइट : vartmansahitya.org

डिजिटल प्रभार : संदीप मौर्य
प्रसार व्यवस्थापक : अभिषेक ओझा
रेखांकन : सिद्धेश्वर एवं अनुभूति गुप्ता
आवरण : अंतरिक्ष

सहयोग राशि : यह प्रति मूल्य 200 रजिस्टर्ड डाक खर्च अतिरिक्त
☐ वार्षिक सदस्यता 1000/- रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित
☐ संस्थाओं व लाइब्रेरियों के लिए वार्षिक : 1440/-रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित
☐ विदेशों में वार्षिक : 100 डॉलर।
खाता सं. : 28660100008342
IFSC :BARB0SHIVBS
बैक ऑफ बड़ौदा, शाखा-शिवपुर, जिला-वाराणसी (उ. प्र.), 221003
Google Pay **9005484595**
कृपया राशि भेजने की सूचना तत्काल ईमेल, व्हाट्सएप अथवा पत्र द्वारा अपने पते सहित भेजें।

वितरक : रुद्रादित्य प्रकाशन समूह
इलाहाबाद-2111015
फोन नं. 0532-2972226, 8175030339

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से **वर्तमान साहित्य,** संपादक मंडल या संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक है। सभी विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में होगा।

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

संपादक
संजय श्रीवास्तव

संपादक मंडल
प्रियदर्शन मालवीय
शैलेन्द्र कुमार मिश्रा, सुरेंद्र राही
आनंद शुक्ल, गोरखनाथ

उप संपादक
शशि कुमार सिंह

सह संपादक
ज्ञानचंद बागड़ी - अलका प्रकाश

संपादन सहयोग
इन्दु श्रीवास्तव, संजीव कुमार मौर्य
अजीत यादव, सीता सरोज

अनुक्रम

प्रथम पुण्य तिथि : जाना कवि-अनुवादक सुरेश सलिल का। ... —भारत भारद्वाज 7

साक्षात्कार : प्रसंगवश–अभिव्यक्ति के खतरे

- मैं सभी धार्मिक कट्टरपंथ के खिलाफ़ हूँ : तस्लीमा नसरीन —मुहम्मद हारून रशीद खान 10
- उम्मीद है, ये दौर कभी तो खत्म होगा : रूपरेखा वर्मा — कुसुम वर्मा 14
- लोकतंत्र की कोख से पैदा होता है फासीवाद! : गौहर रज़ा — वंदना चौबे 17
- उत्तर सत्य की राजनीति को मीडिया अपना धर्म मान रही है : रामशरण जोशी — प्रदीप सिंह 27
- किसी भी भाषा में मुख्यधारा का लेखन मनुष्य-विरोधी नहीं हो सकता : विभूति नारायण राय — शंकर 31

लेख

- गांधी चिंतन और हिन्दी साहित्य — विनोद शाही 35
- जन-तंत्र के प्रहरी : कवि केदारनाथ अग्रवाल — श्रीनारायण पाण्डेय 47
- विष्णु खरे की कविता गहरे संवाद की माँग करती है —दिनेश प्रताप सिंह 50
- कृत्रिम मेधा और मानव मस्तिष्क पर उसका दुष्प्रभाव —हेरम्ब चतुर्वेदी 58

साक्षात्कार : कहन, कहानी औ' संवाद

- मार्क्सीनुक्ता-ए-नज़र समाज की सही तस्वीर पेश करता है : कृश्न चंदर — बलवन्त सिंह 62
- अध्यापक अलग होता है, लेखक अलग : काशीनाथ सिंह — रामकली सर्राफ 66
- बहसों में पक्ष होता है या सिर्फ़ विपक्ष : जाबिर हुसेन — शहंशाह आलम 71
- जाति व्यवस्था को समझे बिना दलित साहित्य को समझ नहीं सकते : शरण कुमार लिंबाले — ज्ञानचंद बागड़ी 74
- लिखना और छपना कभी भी अपनी जिंदगी और उसूलों से बड़ा नहीं : सुधा अरोड़ा — गंगाशरण सिंह 79
- जनेवा कनवेन्शन को भूलकर इज़रायल वह सब कर रहा है जो भूतपूर्व राष्ट्रपति बुश ने इराक में किया था : नासिरा शर्मा — मुहम्मद हारुन रशीद खान 85
- संवेदना को दिलोदिमाग में देर तक पकने दें : उषाकिरण खान — कुमार वरुण 91
- मैं एक राजनैतिक उपन्यास लिखना चाहता हूँ : प्रियंवद — खान अहमद फारूक 95
- हर लेखक अपनी स्थानीयता का प्रतिनिधित्व करता है : भगवानदास मोरवाल — मनोज मोहन 107
- इस दौर ने वर्चस्वशाली वर्ग के वर्चस्व को खंडित कर दिया है : अजय नावरिया — ज्ञानचंद बागड़ी 112
- मैं सुख में हूँ, मैंने जीवन की धज्जियाँ उड़ाई हैं! : गीताश्री — अणुशक्ति सिंह 115
- वे नहीं चाहते कि दलित साहित्य के माध्यम से समाज की विषमता सामने आए : सुशीला टाकभौरे — अमरजीत राम 119
- सभ्य समाज आज भी आदिवासियों को न तो सामान्य नागरिक मानता है और न ही एक मनुष्य : महादेव टोप्पो — जनार्दन गोंड 124
- शूद्र और स्त्री दो ऐसे वर्ग हैं, जिन्हें शास्त्रों से लेकर साहित्य तक न्याय नहीं मिला है : रत्न कुमार साँभरिया — पद्मजा शर्मा 131

कहानी

- स्वयंवरा माइरा मालिनी : हरीचरन प्रकाश 136
- दुःख के उस पार का सुख — गोपाल माथुर 148
- ऑब्जर्वेटरी में कैरेबियन लहर — देवेश पथसारिया 154

साक्षात्कार : आलोचक के मुख से

- नए साहित्य और साहित्यकारों को आलोचना के जरिए स्थापित करने की आवश्यकता है : नामवर सिंह — आशीष त्रिपाठी 161
- पथ यहाँ से अलग होता है : शिवकुमार मिश्र — कुमार वीरेद्र 164

- अपने साहित्य का सबसे अच्छा पाठक खुद लेखक होता है : नीलकांत — अंकित कुमार मौर्य 167
- आलोचना को अति नैतिकतावादी सोच से उबारने की जरूरत है : प्रदीप सक्सेना — कमलानंद झा 170
- लोकधर्मिता के साथ बोलना लिखना ही मुख्य उद्देश्य रहा है : चौथीराम यादव — साधना सरोज 174
- परिवर्तन प्रोडक्शन फोर्सेज़ में चेंज करने से होगा : नंदकिशोर आचार्य — पद्मजा शर्मा 179
- कविता की रचना-प्रक्रिया में कवि की आलोचनात्मक चेतना के सार्थक हस्तक्षेप का सर्वोत्कृष्ट उदारण हैं मुक्तिबोध : राजेन्द्र कुमार — कुमार वीरेन्द्र 187
- प्रेमचंद को तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक कि हम वर्णाश्रम और जाति-व्यवस्था को ना समझें : वीरेन्द्र यादव — सूरज बहादुर थापा 191
- अस्मिता लेखन में संघर्ष के जरिए अर्जित विचार–पूँजी को निर्माण में लगा देने का स्वप्न है : रोहिणी अग्रवाल — प्रज्ञा 202
- स्त्री रचनाशीलता की अब तक उपेक्षित, अवसन्न अवस्था की प्राप्त कड़ियों को ढूँढ़ा और जोड़ा जाय : गरिमा श्रीवास्तव — संजय श्रीवास्तव 208
- अध्यापक और आलोचक का लक्ष्य एक ही होता है—कविता को ठीक से समझना और समझाना : कमलेश वर्मा — महेंद्र प्रसाद कुशवाहा 215

साक्षात्कार : सिनेमा और थिएटर की दुनिया

- मेरी फिल्म प्रचारात्मक न हो जाए, इसके लिए बहुत सचेत रहता हूँ : श्याम बेनेगल — सविता मोहिते (अनु. उषा आठले) 222
- हमें कोई पॉलिटिकल कमेंट्री नहीं करनी है पर पॉलिटिक्स से आप भाग नहीं सकते : अनुराग कश्यप — अजित राय 231
- क्या आपने फलों से लदे पेड़ को झुके हुए देखा है : कुलदीप सिंह — निर्मला दोषी 234
- स्त्री आधुनिकता की ओर बढ़ रही है तो अंधविश्वास क्यूँ परोसा जा रहा है? : अचला नागर — सविता शर्मा 242
- संस्कृति का अर्थ 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' नहीं होता : राकेश वेदा — दिनेश चौधरी 248

साक्षात्कार : कवि कै बोल...

- अल्लम प्रभु से महादेवी का सामना — सुभाष राय 254
- कविता का सारा वैभव भाषा पर है : त्रिलोचन — आशुतोष तिवारी 262
- पुरस्कार झूठे हो सकते हैं—रचना की प्रतिष्ठा नहीं : नरेश सक्सेना — संध्या नवोदिता 270
- कविता का कोई ऐसा सूत्र नहीं मिल रहा है जिससे अपने समय का समग्र रूपक गढ़ सकें : राजेश जोशी — आशीष त्रिपाठी 276
- चिट्ठियाँ मेरे जीवन का अमिय कुंड रहीं : अनामिका — रमा यादव 291
- आक्रामक पूंजी अंततः कला और साहित्य की आत्मा को नष्ट करती है : दिनेश कुमार शुक्ल — आनन्द शुक्ल 294
- विवाद के बिना कैसा साहित्य : कृष्ण कल्पित — प्रेमचंद गांधी 299
- हम ऐसे उजाले में न जाएँ जहाँ से अँधियारा दिखाई ही न दे : सविता सिंह — विपिन चौधरी 305
- कविता की मिट्टी को नम होना चाहिए... : एकांत श्रीवास्तव — विपिन तिवारी, अभिषेक गुप्ता 309
- दलित स्त्री लेखन ने सवर्णवादी स्त्री-लेखन पर एक नैतिक दबाव बनाया है : अनिता भारती — प्रदीप कुमार ठाकुर 321
- मैं खारे पानी में गुड़ की बाल्टी डालती हूँ : नीलेश रघुवंशी — अलका प्रकाश 325

कविताएँ

- कविताएँ—नरेश अग्रवाल, सावित्री बड़ाईक, चंद्र, अनिता रश्मि, राहुल कुमार मौर्य एवं लता जौनपुरी की गज़लें 328

लम्बी कहानी

- जुल्मतों के दौर में —शेखर मल्लिक 337

पुस्तक समीक्षा

- 'रूदादे-सफ़र' : देहदान का मर्म बरास्ते एनाटमी —सुधा ओम ढींगरा 347
- 'सलाम लुई पाश्चर' : कविता में विज्ञान की दुनिया —संध्या नवोदिता 350
- 'एक सूरज स्याह सा' : एक आकस्मिक समीक्षा —विपुल मुद्गल 352
- कहानी ब्रिटिश अफसर के प्रेम और जज्बात की : 'रॉबर्ट गिल की पारो' —डॉ. शहनाज जाफ़र बासमेह 354
- 'पेड़ तथा अन्य कहानियाँ' : विश्वसनीय चरित्रों के कथाबिम्ब —राजनारायण बोहरे 357
- 'भूर-भू-स्वाहा' सिकुड़ते गाँव और फैलते शहर की कहानियाँ —विजय कुमार तिवारी 360
- नवता के साथ अपने समय के प्रति चिंतन : नयी परम्परा की खोज —निरंजन कुमार यादव 364
- जीवन की पीड़ाओं व संघर्ष पर विजय की गाथा —विनीता कुमारी राहुरीकर 367

❖❖❖

सम्पादकीय

हम होंगे.....

हम तो इज़हार- ए- हाल कर बैठे....

साधो,

इस बार बहुत देर हुई आप तक पहुँचने में। इसका अफसोस हमें भी है। मगर यह अंक देख कर शायद आप हमारी मुश्किलों का अंदाज़ा लगा रहे होंगे। पिछले छह-सात महीने से इसे तैयार करने में खासा वक्त लगा। साक्षात्कार एकाग्र के रूप में इसे लाना हमारे लिए एक चुनौती रही। साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में विशिष्ट भूमिका निभा रहे लोगों से लगातार साक्षात्कार के लिए सम्पर्क करना, उसे संपादित करना, टाइप कराना आदि तमाम ऐसे काम रहे जिसे करने में समय भागता रहा और हम दिन-रात इसे लेकर काम करते रहे। खैर, तमाम जद्दोजहद के बाद यह अंक आप तक ले आने में हमें किसी तरह कामयाबी मिली। इस दौरान सुधी पाठकों की तरफ से भी हमारा उत्साहवर्धन किया गया। लोगों ने यह तक कहा कि साक्षात्कार पर केंद्रित किसी पत्रिका ने इतना वृहद अंक कभी नहीं निकाला। शायद यह सच प्रतीत होता है क्योंकि पूर्व में ऐसे किसी अंक की सूचना फिलहाल तो नहीं है। दरअसल इसके पीछे मेरे ख्याल में 'द पेरिस रिव्यू' पत्रिका रही जिसमें टी.एस.इलियट, जार्ज लुइस बोर्गेस, गैब्रियल गार्सिया मारखेज़, एलन गिन्सबर्ग, नादीन गार्डिमर, अर्नेस्ट हेमिंग्वे, जॉन इरविंग, टोनी मारिसन सहित अनेकानेक साहित्यकारों के विस्तृत साक्षात्कार प्रकाशित किए गये। इसका अपना एक इतिहास है। 1953 में 'द पेरिस रिव्यू' की शुरुवात हुई थी। इसमें रचनात्मक लेखन और लेखन की प्रक्रिया को महत्व देते हुए पत्राचार और साक्षात्कार को खासी तरजीह मिली थी। साहित्यिक साक्षात्कार के लिए इस पत्रिका ने मानदंड स्थापित किए। हमने भी कुछ वैसी ही योजना बनायी मगर अनुकरण पर काम करने की प्रवृत्ति कभी रही नहीं लिहाजा यह इरादा बदले हुए रूप में आकार लेने लगा। फिर ये हुआ कि क्यों न एक साथ अनेक साक्षात्कार सामने लाए जायँ ताकि पाठकों को एक ही जगह पर इतने सारे लेखकों-संस्कृतिकर्मियों को अंतरंग रूप में अनौपचारिक स्तर पर जानने समझने का अवसर मिल सके। ये साक्षात्कार उनके लिए दस्तावेज का काम भी कर सकते हैं। इसके अलावा ऐसी सूचनाएँ इतिहास के लिए सहायक भी हो सकती हैं। उल्लेखनीय है कि सौ साल से भी ज्यादा पुराने साक्षात्कार हमारे यहाँ हिंदी में हैं। ध्यान आ रहा है कि 'समालोचना' पत्रिका ने 1905 में प्रसिद्ध संगीतकार विष्णु दिगंबर पलुस्कर से पं.चंद्रधर शर्मा गुलेरी के एक साक्षात्कार को 'संगीतकार की धुन' शीर्षक से प्रकाशित किया था। हिंदी में इसे पहला साक्षात्कार कह सकते हैं। बाद में 1931 में 'रत्नाकरजी से बातचीत' और 1932 में 'प्रेमचंद के साथ दो दिन' जैसा साक्षात्कार 'विशाल भारत' में छपा था। ये दोनों साक्षात्कार पं.बनारसी दास चतुर्वेदी ने लिए थे। इसी दौरान आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पं.अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', बाबू श्यामसुंदर दास, बाबू मैथिलीशरण गुप्त से साक्षात्कार बेनीमाधव शर्मा की पुस्तक 'कवि दर्शन' में प्रकाशित हुआ। फिर दिसंबर 1947 के 'हंस' में निरालाजी से लिया गया साक्षात्कार आया था। तो, इस तरह हमारे यहाँ साक्षात्कार की एक अच्छी शुरुआत मिलती है। वैसे होने को तो 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में भी इसकी झलक मिल ही जाती है। इसी तरह हमारे प्राचीन ग्रंथों में नचिकेता-यम संवाद, गार्गी-याज्ञवल्क्य संवाद, भरत-आत्रेय संवाद, मरणासन्न रावण से लक्ष्मण का संवाद, भीष्म-युधिष्ठिर संवाद, कृष्णार्जुन संवाद आदि भी कहने को साक्षात्कार ही हैं। लेकिन इसे हम वर्तमान साक्षात्कार विधा के मेल में नहीं ले पाएँगे।